आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां अंक : पहला मई –2013

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

ऊँचा और सुच्चा जीवन (5)
(गुफा दर्शनों से पहले संदेश)

रक्षक (9)
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
साँपला (हरियाणा)

याद रखो ! (19)
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

सवाल–जवाब (29)
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन – 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया – 0 99 28 92 53 04 **उपसम्पादक**: नंदनी / माया रानी

सहयोग : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

प्रकाशन दिनांक 1 मई 2013 –134– **मूल्य – पाँच रुपये**

अन्दर जोत जल रही

अन्दर जोत, जल रही, बाहर मन, भूला फिरे, (2)

1. सहस्र कमल में, जोत रोशनाई, घंटा शंख, आवाज़ सुनाई, (2)
घट-घट में जग रही,
बाहर मन भूला .....

2. त्रिकुटी बादल, बजत मृदंगा, तारा मंडल, सूरज चंदा, (2)
चमन फुलवाड़ी लग रही,
बाहर मन भूला .....

3. दशम् दवारा, शब्द झुनकारा, सुन्न मंडल, त्रिवेणी धारा, (2)
किंगरी सारंगी बज रही,
बाहर मन भूला .....

4. भंवर गुफा मोती, महल अटारी, सुरत निरत धुन, बीन सुनारी, (2)
सन्त मंडली सज रही,
बाहर मन भूला .....

5. सच्चखंड सुरत जा, अमृत पीया, सतपुरुष का, दर्शन कीया, (2)
धुन प्यार की बज रही,
बाहर मन भूला .....

6. सच्चा देश सच, तख्त सुहाया, दास 'अजायब', कृपाल ध्याया, (2)
सन्त दया बरस रही,
बाहर मन भूला .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले संगत को संदेश

ऊँचा और सुच्चा जीवन

(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

सभी सन्त-महात्माओं ने **ऊँचे और सुच्चे जीवन** पर बहुत जोर दिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''किसी गंदे मकान में एक बादशाह के आने की उम्मीद करना हमारी भूल है। इसी तरह काम-वासना से भरा हुआ जीवन बिताते हुए अगर हम यह आशा रखें कि हमारे अंदर परमात्मा प्रकट हो जाएगा तो यह एक मज़ाक है अपने आपके साथ धोखा है।''

बहुत से प्रेमियों को महाराज कृपाल का सतसंग सुनने का और आपके साथ रहने का मौका भी मिला है। आपकी लेखनियाँ पढ़ने से पता लगता है कि आपने सदा **ऊँचे और सुच्चे जीवन** पर जोर दिया और कहा, ''सारे काम बाद में पहले परमात्मा है।''

प्यारेयो! सतसंगी की आँखों में पवित्रता झलकनी चाहिए, शरीर में से रुहानियत की खुशबू आनी चाहिए। सतसंगी एक नमूना बनकर पेश आए ताकि दूसरे लोगों का भी फायदा हो। सतसंगी के लिए काम भरा जीवन बिताना अच्छा नहीं। काम और नाम इकट्ठे नहीं रह सकते ये एक-दूसरे के उलट हैं। जहाँ नाम प्रकट हो जाता है वहाँ से काम आलोप हो जाता है; ये एक-दूसरे के दुश्मन है जिस तरह अँधेरे का दुश्मन प्रकाश है।

सन्त-महात्मा कुदरत के नियमों के मुताबिक अपना जीवन बिताते हैं और अपने सेवकों को भी यही हिदायत देते हैं। किसी कमाई वाले सतसंगी के लिए किसी अन्धे को आँख दे देना, किसी लगड़े को टाँग दे देना मुश्किल नहीं। सन्त परमात्मा पर हुकूमत नहीं करना चाहते और न ही अपने सेवकों को ऐसा सिखाते हैं। सन्त-महात्मा परमात्मा की हुकूमत चाहते हैं और सेवकों को भी यही हिदायत देते हैं कि जो सुख परमात्मा की हुकूमत में रहने में है वह अपनी हकूमत करने में नहीं।

आप सिक्ख इतिहास पढ़कर देखें! आपने उसमें गुरु हरगोबिंद जी के बेटे अटल राय की कहानी पढ़ी होगी। अटल राय सात साल के थे। एक दिन कुछ लड़के इकट्ठे खेल रहे थे। एक लड़के मोहन की बारी रह गई, वह घर गया तो उसकी मौत हो गई। दूसरे दिन अटल राय, मोहन के घर उसको बुलाने गए कि हमारी बारी दे।

वहाँ उसके माता-पिता और साथी-संगी रो रहे थे कि मोहन तो मर गया है। अटल राय ने कहा, ''नहीं! यह मरा नहीं हमारी बारी देने के लिए बहाना करके लेटा हुआ है।'' अटल, मोहन की बाजू पकड़कर उसे खेल के मैदान में ले गए। जब गुरु हरगोबिंद को इस चमत्कार का पता लगा तो उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, ''देख बेटा! इस समय मैं चोला छोड़ता हूँ या इसका मूल्य तुझे चुकाना पड़ेगा अगर परमात्मा के कानून का उल्लंघन उसके प्यारे बच्चे ही करेंगे तो परमात्मा का हुक्म कौन मानेगा?''

बाबा अटल राय उसी जगह लेट गए और अपनी देह त्याग दी। बाबा अटल की समाधि पर बहुत बड़ा महल बना हुआ है। सन्त कुदरत के कानून का पालन करते हैं और अपने सेवकों को सख्ती से समझाते हैं कि कुदरत के कानून के खिलाफ मत जाएं। मालिक हमारे ऊपर रहम करता है और तभी हमारे लिए दरवाजा खोलता है जब हम उसके बन जाते हैं।

परमात्मा जिस प्रत्यक्ष शरीर में काम करता था वह कृपाल रुप कृपा करने के लिए इस गरीब अजायब के पास आया। इस जगह की पहले कोई महानता नहीं थी। सतगुरु जो कहते हैं अगर हम वह कर लेते हैं तो उस जगह की महानता बन जाती है।

यह उस दयालु की दया थी कि उसने अपने मुबारक चरण इस धरती पर रखे और इस आत्मा पर रहम किया जो ब्यान से बाहर है। उन पवित्र चरणों के लिए देवी-देवता भी लोचते हैं और उन चरणों को प्राप्त करने के लिए हम लोग समाधियाँ लगाते हैं।

***

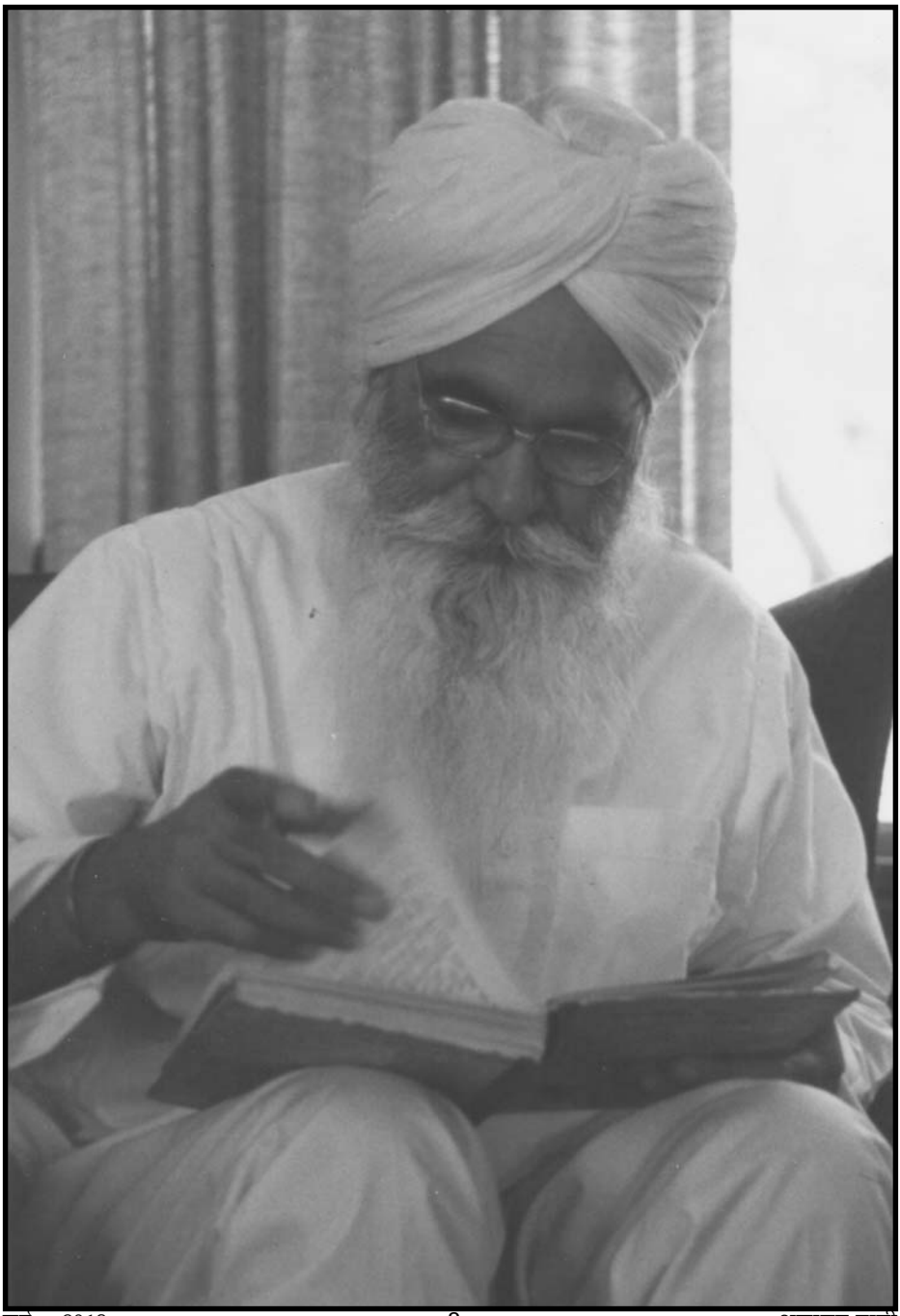

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

रक्षक

गुरु नानकदेव जी की बानी

साँपला (हरियाणा)

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। इस शब्द में गुरु नानकदेव जी मन की तुलना हिरण, भँवरा और मछली के साथ कर रहे हैं।

जिस तरह हिरण जंगलों में विषय-विकारों की तरफ दौड़ता है यही हालत हमारे मन की है। जिस तरह भँवरा फूलों की सुगन्ध पर मस्त है उसी तरह हम भी दुनिया के पदार्थों में मस्त हैं। जिस तरह मछली जीभ के लालच में आकर मछुआरे के जाल में फँस जाती है इसी तरह हमारा लोभी मन भी दुनिया के पदार्थों के लालच में आकर अपनी मौत को भूल जाता है और प्रभु से दूर होकर चौरासी में चला जाता है। परमात्मा से बिछुड़ी हुई आत्मा को शब्द ही परमात्मा से मिला सकता है। अपने सोमे से बिछुड़ी हुई नदियाँ परमात्मा की दया से ही मिलती हैं।

तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम।।
बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम।।

गुरु नानकदेव जी महाराज बड़े प्यार से मन को काला हिरण कहकर ब्यान कर रहे हैं। जिस तरह काला हिरण झाड़ियों में छलाँगें मारता फिरता है लेकिन जिस मालिक ने उसे पैदा किया है उसे याद नहीं करता। जिस तरह शिकारी हिरण के पीछे भागता है इसी तरह काल भी हमारे पीछे हमेशा ताक में रहता है। काल

दिन-दिन हमारे ऊपर मौत का शिकंजा कसता जा रहा है, हम भूले बैठे हैं। दुनिया के विषय-विकार देखने में मीठे लगते हैं। हम सोचते हैं कि हम विषय-विकारों को, इन्द्रियों को भोग रहे हैं लेकिन इन्द्रियां हमें भोग लेती हैं; हमारे साथ छलावा हो रहा है।

फिरी होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए।।
ओह जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए।।

गुरु साहब प्यार से समझाते हैं, ''दुनिया के सुख बिजली के लश्कारे के समान है जिस तरह बिजली की चमक देखने में अच्छी लगती है फिर बादलों में ही समा जाती है। समुद्र की लहर थोड़े समय के लिए ही उठती है फिर समुद्र में ही समा जाती है।''

हम जब दुनिया में जन्म लेते हैं उस समय माँस का एक लोथड़ा होते हैं। हम यहाँ जितनी भी सामग्री इकट्ठी करते हैं उसे देख-देखकर खुश होते हैं लेकिन पता नहीं कब मौत की घंटी बज जानी है! हमने सब कुछ बिजली के लश्कारे की तरह यहीं छोड़कर चले जाना है।

हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ।।

गुरु साहब कहते हैं कि उस मालिक के बिना हमारा कोई **रक्षक** नहीं, हम परमात्मा को भूल चुके हैं। ऐसा नहीं कि हिन्दुस्तान के सन्तों ने ही परमात्मा की तारीफ की है या उसके मिलने का रास्ता बताया है। हर सन्त ने चाहे वह किसी भी मुल्क में हुआ उसने हमें बताया कि इंसान का जामा उत्तम है। यह जामा बार-बार नहीं मिलता, परमात्मा ने बहुत दया करके हमें यह जामा दिया है जो इस जामें का सही इस्तेमाल नहीं करते उन्हें अन्त समय में पछताना पड़ता है।

परमात्मा ने हमें अपने साथ मिलने का जो मौका दिया है हमें सबसे पहले उसे ही आँखों के सामने रखना चाहिए। परमात्मा कुलमालिक है। वह अपने मिलने का जो भी तरीका रखना चाहता था उसने रखा है। परमात्मा हर एक के अंदर है जिस तरह तिलों में तेल है। पत्थर में आग है। मेहंदी के पत्तो में रंग है। फूलों में खुशबू है इसी तरह परमात्मा हम सबके अंदर है लेकिन अंदर होते हुए भी हम उसे देख नहीं सकते। हर महात्मा ने इस देह को उत्तम कहा है। किसी महात्मा ने इसके अंदर पाँच लोक, किसी ने इसके अंदर पाँच मण्डल कहा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

देही नगरी उत्तम थाना, पंच लोक वसे प्रधाना।

परमात्मा इन पाँच मण्डलो से ऊपर सतलोक में बैठा है। जब तक कोई पूर्ण गुरु वहाँ से आकर हमें वहाँ का भेद न दे, हमारे साथ अंदर जाकर हमें वहाँ न ले जाए तब तक हम अंदर बैठे हुए परमात्मा से कभी नहीं मिल सकते।

सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''नाम के बिना हमारा कोई **रक्षक** नहीं, तू उठ! परमात्मा की भक्ति कर। भक्ति करेगा तो ही परमात्मा से जाकर मिलेगा। जिन वस्तुओं ने हमारे साथ नहीं जाना दिन-रात उनके साथ हमारा लगाव है और जिसने अन्त समय हमारी सहायता करनी है हमारे साथ जाना है उसके साथ हमारा प्यार नहीं, हम उस ताकत को भूले बैठे हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

कबीरा घाणी पीड़ दे सतगुरु लए छुड़ाए,
परा पुर्वली भावनी ते प्रकट होई आए,
यम का ठेंगा बुरा है ओह नहीं सहा जाए,
एक जो साधु मोहे मिलया तिन्हों लया छुड़ाए।

यम जीव को बहुत सख्त सजाएं देते हैं। यम कभी इसे अग्नि में फैंकते हैं कभी तिल की तरह कोल्हू में पीसते हैं तो कभी कीलों पर चलाते हैं। हमारे पिछले अच्छे भाग्य थे जो हमें पूर्ण साधु मिल गए जिन्होनें हमें बचा लिया।

मिस्टर ऑबराय ने एक किताब लिखी है आप उसे पढ़कर अपने मन को समझा लिया करें। उसमें परमात्मा कृपाल ने अपनी दया करके हमारे भूले हुए मन को समझाने के लिए भाई सुन्दरदास के अन्दर का हाल ब्यान किया है। यह सब कुछ संगत के फायदे के लिए ही किताब में छापा गया है ताकि हमारे भूले हुए मन को ठोकर लगे। आप यह न सोचें कि हमें कोई पूछने वाला नहीं!

प्यारेयो! जिसने इतना बड़ा संसार बनाया है उसने इसे ऐसे ही नहीं छोड़ दिया वह खुद इसकी संभाल कर रहा है। वह सब देख रहा है कि हम जीव क्या कर रहे हैं? परमात्मा ने मौत और पैदाईश के विधान बनाए हुए हैं और इनका हिसाब-किताब रखने के लिए देवता मुकर्र किए हुए हैं। सन्तों ने धर्म-ग्रन्थों में इन देवताओं का जिक्र किया है। मुसलमानों ने उसे अजराईल फरिश्ता कहा है और हिन्दुओं ने उसे धर्मराज कहा है। इन दुखों से डरते हुए ही राजा गोपीचन्द और राजा भर्तरी गोरखनाथ के चरणों में जाकर गिरे और योग प्राप्त किया।

परमात्मा ने बाबा बिशनदास के शुभ कर्मों का ईनाम आपको हर किस्म की सहुलियत दी थी, आप अच्छे पढ़े-लिखे थे लेकिन इसी कष्ट से डरते हुए आप बाबा अमोलक दास के चरणों में जाकर गिरे और कहा, ''नरक में से निकाल दें।''

प्यारेयो! जिन्दगी सदा नहीं रहनी, मौत जरूर आएगी। आपको जो समय मिला है इसका सही इस्तेमाल करें।

भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम।।
मैं गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम।।
बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ।।
सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज भँवरे की मिसाल देकर समझा रहे हैं। जिस तरह भँवरा कभी इस फूल पर तो कभी उस फूल पर बैठता है। वह फूल की खुशबू में इतना मस्त हो जाता है कि रात हो जाती है तो वह फूल में ही बंद हो जाता है। सुबह इत्र निकालने वाले फूल तोड़कर ले जाते हैं और फूल को तेल में तलते हैं तो भँवरा बीच में ही तला जाता है। भँवरे को यह कष्ट इसलिए आया कि वह फूलों की खुशबू में मस्त होकर अपने आपको भूल गया उसने अपने घर को बिसार दिया तो उसे आग में जलना पड़ा।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मैंने अपने गुरु से पूछा तो मेरे गुरु ने बताया, ''जैसे भँवरा फूलों पर मस्त होकर इतना कष्ट सहता है इसी तरह यह जीव भी विषय-विकारों की दुनिया में आकर मस्त हो जाता है, अपनी मौत को भूल जाता है जिसकी सजा इसे नरकों में जाकर कष्ट उठाना पड़ता है।''

जिनके घर में किसी का अन्त समय आ जाता है उनके पास नाम नहीं होता फिर भी वे मेरे पास नेक सलाह पूछने के लिए आ जाते हैं। वे लोग आकर बताते हैं कि हमें साँप खा रहे हैं, कुत्ते काट रहे हैं। प्रेमी और भी कई प्रकार के कष्ट ब्यान करते हैं। सच तो यह है कि हमारे कर्म वही रूप धारण करके हमें काटते हैं लेकिन तजुर्बा बताता है कि जब हम पूर्ण सन्तों की तरफ जाते हैं तो वे हमारा पीछा छोड़ देते हैं फिर मरीज परेशान नहीं होता।

परमात्मा यह रियायत करता है कि जिस जगह मालिक का भजन होता है अगर हम ऐसे महात्मा की शरण में जाते हैं तो हमें साँप और कुत्ते काटने से हट जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''यह मन लक्कड़मंडी का संडा है। यह अपनी जिद नहीं छोड़ता आप इसे समझाकर रास्ते पर लाओ कि नाम के बिना तेरा कोई दोस्त नहीं, संगी-साथी नहीं तुझे भी भँवरे की तरह तपना पड़ेगा।''

जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ।।

गुरु नानकदेव जी हमें सुनी-सुनाई बातें नहीं कह रहे। जो देखा है वही कह रहे हैं कि नाम के बिना किसी ने बात नहीं पूछनी। यम तुझे पकड़कर ले जाएंगे और भूतों की योनि में डाल देंगे।

सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ।।

गुरु नानकदेव जी बड़े दृढ़ विश्वास से कह रहे हैं कि मैं आपको सच कह रहा हूँ मेरा कहा कभी नाश नहीं होगा। जागो, नाम जपो और समय की कद्र करो।

मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम।।
साचा साहिबु मनि बसै की फासहि जम जाले राम।।

यह आत्मा का देश नहीं। हम दिन-रात जिन धन्धों में लगे हुए हैं ये आत्मा के धन्धे नहीं। आत्मा निर्दोष है मन का साथ लेकर कष्टों में फँसी हुई है। पता नहीं कितने ही डिक्टेटर इस संसार को अपना बनाकर चले गए और कितने ही इसे अपना बनाएंगे। यह दुनिया कभी किसी के साथ न गई है, न जा ही सकती है।

मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ।।
संसार माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ।।

अब आप मछली की मिसाल देते हैं कि जैसे मछली पानी में डुबकी लगाती है लोभ में आकर मछुआरे के जाल में फँस जाती है फिर मछली को कीमा-कीमा होकर हाँडियों में चढ़ना पड़ता है। काल ने दुनिया में धन्धों के जाल बिछाए हुए हैं, संसार में विषय-विकारों का चोगा बिखेरा हुआ है। हमारा मन इस चोगे को चुगने के लिए जाता है उसी में फँस जाता है और मरे बिना छूटता नहीं।

जब मैं पहली बार पश्चिम गया तो एक आदमी और एक औरत ने मेरे पास आकर कहा कि हम शादी करवाना चाहते हैं लेकिन हम भोग-वासना से ऊपर रहेंगे। मैंने हँसकर कहा कि सन्तमत में शादी करवाना जायज है। मैं आपके विचारों की कद्र करता हूँ लेकिन मैं अंदर से हँस भी रहा था कि कोई कोयले को हाथ में रखकर यह कहे कि मैं हाथ काला नहीं होने दूँगा तो यह बड़ी अचरज बात है। इस समय इनके कई बच्चे हैं। मियाँ बीवी में

और बीवी मियाँ में दोष निकालती है। आमतौर पर यह कहानी मैं तभी सुनाता हूँ जब ये प्रेमी ग्रुप में आए होते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''यह दुनिया काजल की कोठरी है। जो इसमें से बचकर निकल जाए मैं उस पर बलिहार जाता हूँ और मैं उसके पैर चूमने को तैयार हूँ।''

कई प्रेमी मेरे पास आकर ऐसा भी कहते हैं कि हम दुनिया के भोगों से उपराम रहेंगे लेकिन जब उन्हें भोगों का सामना करना पड़ा तो वे उनमें इतने मस्त हो गए कि अपने आपको भूल गए।

भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ।।
सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''यह आत्मा का देश नहीं, इसका देश सतनाम है सचखण्ड है। उठते-बैठते नाम की भक्ति करें, नाम के साथ जुड़ें रहें। मैं सच कहता हूँ कि एक दिन मौत ने जरूर आना है। जिस संसार को हम अपना बनाते हैं यह आज तक किसी का नहीं बना, न ही हमारा बनेगा।''

नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम।।
जुगु जुगु मीठा विसु भरे की जाणै जोगी राम।।

अब गुरु नानक साहब नदी की मिसाल देते हैं कि अपने सोमे से बिछुड़ी हुई नदियाँ परमात्मा की दया से ही समुद्र में जाकर मिल जाती हैं। जीव युगों-युगों से विष के फल चखते आ रहे हैं और भूलते आए हैं। हर युग में जो भी परमात्मा से जुड़ गया वह इस सच्चाई को समझकर अपने जीवन को परमात्मा के लेखे लगा गया। ऐसा नहीं कि आज तक इस असलियत को किसी ने नहीं समझा, इस भवसागर से कोई पार नहीं हुआ!

जो पार हुए हैं वे हमें अपनी लेखनियों के द्वारा समझा रहे है जिस तरह नदियाँ परमात्मा की दया से अपने सोमे से बिछुड़कर समुद्र में जाकर मिल जाती हैं। इसी तरह परमात्मा से बिछुड़ी हुई आत्मा गुरु-शब्द के जरिए परमात्मा से जाकर मिल जाती है।

परमात्मा की दया होती है तो वह हमें सतगुरु से मिलवाता है। हमारे अंदर नामदान प्राप्त करने की इच्छा पैदा करता है, हम अभ्यास करके परमात्मा से मिल सकते हैं।

बिनु नाम हरि के भरम भूले पचहि मुगध अचेतिआ।।
हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ।।
सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ।।

आखिर में गुरु नानकदेव जी हमें समझाते हैं कि परमात्मा को भूलना दुखों को न्योता देना है। परमात्मा से दूर जाना अपनी शान्ति को खोना है। शान्ति नाम में है और नाम गुरु से मिलता है। जो लोग गुरु से नाम लेकर अभ्यास करते हैं सच्चे दिल से गुरु की शरण में बैठते हैं उन्हें विषय-विकारों की चोटें नहीं सहनी पड़ती। गुरु की दया के बिना कोई आत्मा परमात्मा से नहीं मिल सकती न ही नाम से जुड़ सकती है। जो नाम का आसरा छोड़ देते हैं वे रोते हुए ही संसार में आए थे और अन्त समय रोते हुए ही जाते हैं।

परमात्मा कृपाल ने रहम करके हमें अपने घर का भेद दिया। आप हम जीवों की खातिर शान्ति का देश छोड़कर दुखों की नगरी में बीमारियों का खोल पहनकर आए। हमें भी चाहिए कि हम आपके बताए हुए रास्ते पर चलें, शब्द-नाम की कमाई करें; मन के कहने पर चलकर भटके नहीं। हमें परमात्मा के साथ जुड़े रहना चाहिए ताकि हमें अन्त समय पछताना न पड़े। ***

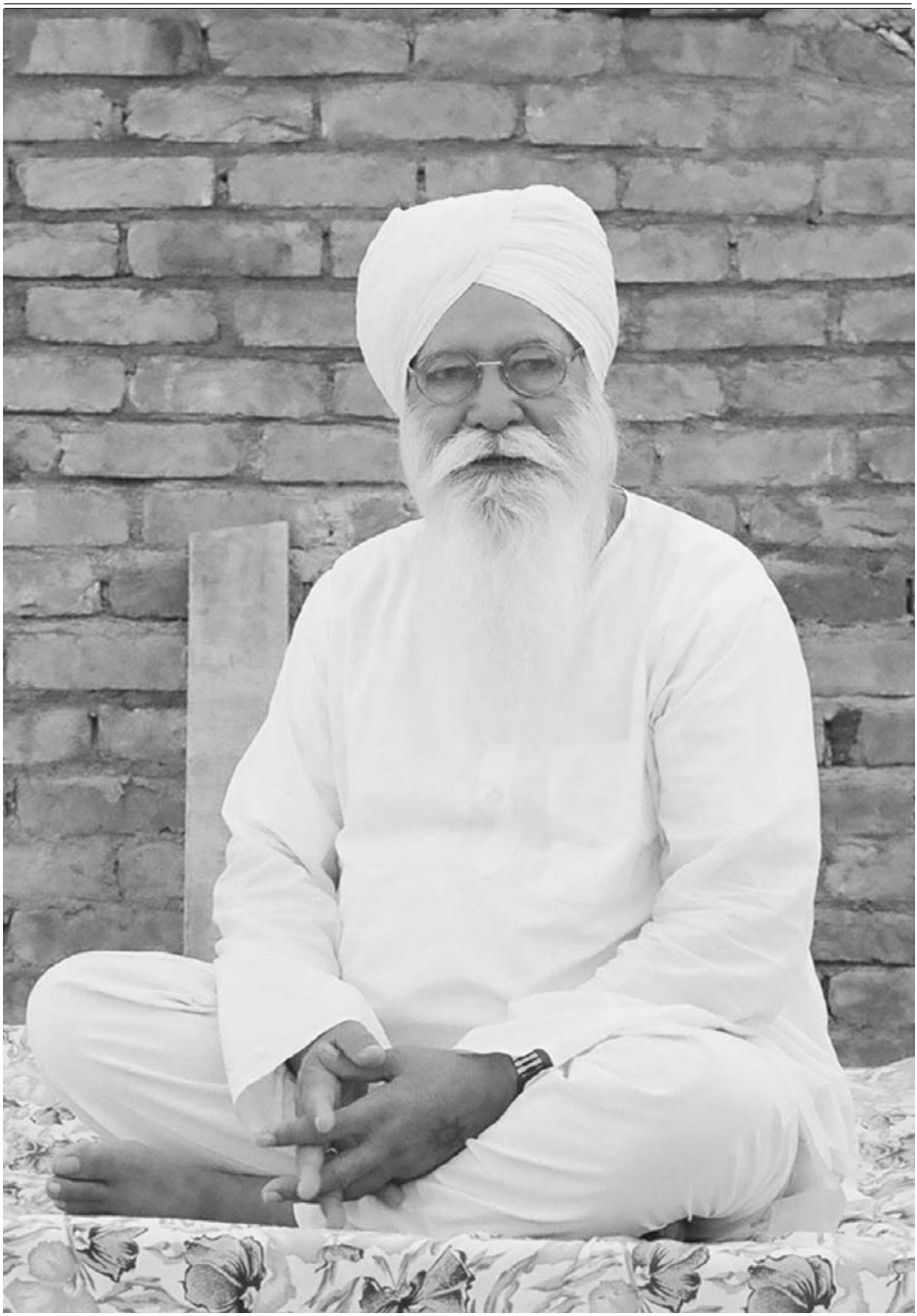

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

याद रखो!

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

दुनिया में दो रास्ते एक गुरुमत और दूसरा मनमत है। लोग मेहनत नहीं करते, बाहर ही रीति-रिवाज कर्मकांड करके परमात्मा से मिलना चाहते हैं इस तरह न किसी को परमात्मा मिला है और न मिल ही सकता है। महात्मा रीति-रिवाज उसे कहते हैं जिस तरह कोई आदमी गिरी को प्राप्त करना चाहता है लेकिन छिलके से प्यार करता है। मक्खन निकालना चाहता है लेकिन लस्सी से प्यार करता है अगर हम पानी में से मक्खन निकालना चाहें तो कभी भी मक्खन नहीं निकाल सकते क्योंकि मक्खन दूध में से ही निकलेगा; यह मनमत है।

सन्त-सतगुरु हमें हमेशा यही कहते हैं कि परमात्मा आपके शरीर के अंदर है। सच्चा मंदिर और ठाकुरद्वारा आपका शरीर है। परमात्मा ने नाम की ताकत हर एक शरीर के अंदर रखी हुई है लेकिन हम उस ताकत को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। नाम पढ़-पढ़ाई का मजबूत नहीं, नाम सच्चखंड में है। सन्त-सतगुरु हमें नाम के पास पहुँचने का साधन और तरीका बताते हैं, वे तरीका ही नहीं बताते बल्कि अंदर कदम-कदम पर हमारी मदद भी करते हैं; यही गुरुमत है। हम जब तक महात्माओं की संगत में नहीं जाते तब तक नाम प्राप्त नहीं कर सकते। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

नाम वसे चौथे पद माहीं तू ढूंढे त्रिलोकी माहीं।

आज हम जिस त्रिलोकी में चक्कर लगा रहे हैं जन्म-मरण का कष्ट भोग रहे हैं, यह काल की रचना है लेकिन परमात्मा अनाम है वह सच्चखंड में बैठा है।

याद रखो! गुरु का यह मिशन नहीं होता कि वह बड़े-बड़े डेरे और जायदादें बनाए। गुरु का काम है कि ज्यादा से ज्यादा आत्माएं काल के जाल से निकालकर सतलोक पहुँचाई जाएं। परमात्मा ने गुरु को यही मिशन देकर भेजा होता है। **याद रखो**! कि चेला गुरु से ज्यादा तरक्की नहीं कर सकता।

हम कदम-कदम पर गुरु से मिलते हैं। जब हमारा जन्म होता है तब माता-पिता हमारे गुरु होते हैं। जब हम थोड़ा सा होश संभालते हैं हमारे बहन-भाई हमें चलना सिखाते हैं वे भी गुरु का काम करते हैं। जब थोड़े से और बड़े होते हैं स्कूलों-कालेजो में जाते हैं तो हमारे टीचर हमारे गुरु का काम करते हैं। हमारे यार-दोस्त हमें समाज की जानकारी देते हैं वे भी गुरु का काम करते हैं। जब हम बुजुर्ग हो जाते हैं राजनीतिक लोगों से मिलते हैं तो वे हमें देश के प्रति जानकारी देते हैं; वे भी उस्तादों का काम करते हैं।

असली गुरु किसी खास समाज या किसी खास फेमिली का नहीं होता। वह 'शब्द' ही देह धारण करके इस संसार मंडल में आता है। उसका सब समाजों से प्यार होता है। वह किसी की निन्दा या आलोचना नहीं करता, सारा विश्व ही उसका घर होता है।

याद रखो! ऐसी महान आत्माएं मालिक की तरफ से इस संसार मंडल में आती हैं, उन्हें लोग नहीं थापते। यह परमात्मा का फैसला होता है कि मैंने जीवों को आगे ले जाने का काम किसे सौंपना है, किसे संसार में भेजना है और कौन यह काम कर सकता है? जिस पोल पर यह ताकत काम करती है उसकी आँखे खुली होती है, उसकी निगाह बहुत ऊँची होती है। वह एक जगह बैठकर सारे संसार को देखता है कि ऐसा कौन है? जिसे वह अपने पास खींचेगा या खुद चलकर उसके पास जाएगा।

ऐसी महान आत्माएं चाहे गरीबी में या अमीरी में जन्म लें इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता! ये जिस मकसद के लिए आते हैं उसे आंखों के आगे रखते हैं। ऐसी महान आत्माओं ने बहुत तपस्या और नाम की कमाई की होती है। इन्होंने गुरु के हुक्म की पालना की होती है। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पाँचो जानी दुश्मनों से ऊपर होते हैं। इन्होंने काल की ताकतों को अपना मित्र बनाया होता है, अपनी जिंदगी में ही शान्ति प्राप्त की होती है

गुरु रामदास जी के तीन बेटे थे। बड़ा बेटा पृथ्वीचंद दूसरा बेटा महादेव और सबसे छोटा बेटा अर्जुनदेव था। अर्जुनदेव में गुरु का प्यार कूट-कूटकर भरा हुआ था। अर्जुनदेव ने अपने पिता को दुनियावी पिता नहीं समझा। अर्जुनदेव हमेशा कहते थेः

हर जिओ नाम पड़यो रामदास।

इस समय परमात्मा का नाम रामदास पड़ गया है। वह इंसान नहीं इंसानी जामें में भगवान का काम कर रहा है। पृथ्वीचंद में अहंकार था कि मैं आने-जाने वालों की बातचीत, मुलाकात गुरु साहब से करवाता हूँ; चिट्ठी पत्री का काम करता हूँ लेकिन वह गुरु का हुक्म नहीं मानता था। जब गुरु रामदास जी अर्जुनदेव की सेवा और नम्रता पर खुश होकर उसे रूहानियत का ताज पहनाने लगे तो पृथ्वीचंद अपने पिता के साथ झगड़ा करने लगा कि मैं बड़ा हूँ मेरा हक है आप तरफदारी करते हैं। गुरु रामदास जी ने कहाः

काहे झगड़त हो संग बाप।

बेटा! तू अपने बाप से झगड़ा क्यों करता है? झगड़े में कोई फायदा नहीं। यह मेरा फैसला नहीं यह परमात्मा की दरगाह का फैसला है। वहाँ से जो हुक्म आया मैंने वह दे दिया है। यह गद्दी अहंकारियों की नहीं नम्रता वालों की होती है।

पृथ्वीचंद संगत में अपना दबदबा रखता था। सब लोग उसकी जान पहचान वाले थे। पृथ्वीचंद ने कहा कि जो अर्जुनदेव को मानेगा मैं उसे देख लूँगा। गुरु रामदास जी ने संगत के लिए जो जायदाद बनाई थी पृथ्वीचंद ने अपनी पार्टी के जोर से उस जायदाद पर कब्जा कर लिया।

गुरु अर्जुनदेव जी तो अपने गुरु के प्यार में ही मस्त थे। उन्होंने संगत में कोई प्रभाव नहीं बनाया, कमाई वालों को इन चीज़ों की कोई जरूरत नहीं होती। गुरु अर्जुनदेव जी छहरट्टा साहब(अमृतसर) में एक कुआँ लगाकर खेती करते और साध-संगत की सेवा करते फिर भी पृथ्वीचंद का दिल ठंडा नहीं हुआ कि दो-चार आदमी भी अर्जुनदेव के पास क्यों जाते हैं?

हिन्दुस्तान में मुगल बादशाह जहाँगीर बहुत मशहूर बादशाह था। पृथ्वीचंद का रसूक जहांगीर के साथ था। पृथ्वीचंद ने जहाँगीर को सिखाकर अर्जुनदेव को गर्म तवे पर बिठाया सिर में गर्म रेत डलवाया। आज भी लोग अर्जुनदेव जी को याद करते हैं। जून के महीने में गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया था उस महीने में आज भी जगह-जगह छबीलें लगती हैं। पृथ्वीचंद को कोई याद नहीं करता अगर करता भी है तो घृणा से ही याद करता है।

समय के साथ ऐसे कानून बने हैं कि सरकार ने सारी जायदाद पर कब्जा कर लिया। हिन्दुस्तान में आज हम तीस एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं रख सकते। आखिर दुनिया की जायदाद हमारे साथ नहीं जाती। अर्जुनदेव ने नाम जपा था गुरु के साथ प्यार किया था चाहे पृथ्वीचंद ने उस समय की हुकूमत से आपको कितने भी कष्ट दिलवाए, हम आज भी उन्हें प्यार से याद करते हैं।

पृथ्वीचंद का लड़का मेहरबान चंद बहुत आलम-फाजल था। उसने गुरु ग्रन्थ की तरह ही ग्रन्थ रचा और गुरु अर्जुनदेव की तरह ही घर बनाया। उसने हर किस्म की नकल की लेकिन नकल असल में नहीं बदल सकी। पृथ्वीचंद कामयाब नहीं हुआ। अर्जुनदेव इसलिए कामयाब हुए क्योंकि आपमें गुरु का प्यार था, आप गुरुमत पर चलते थे आपने गुरु को अंदर प्रकट कर लिया था। पृथ्वीचंद ने गुरु को गुरु नहीं समझा वह अहंकार करता था।

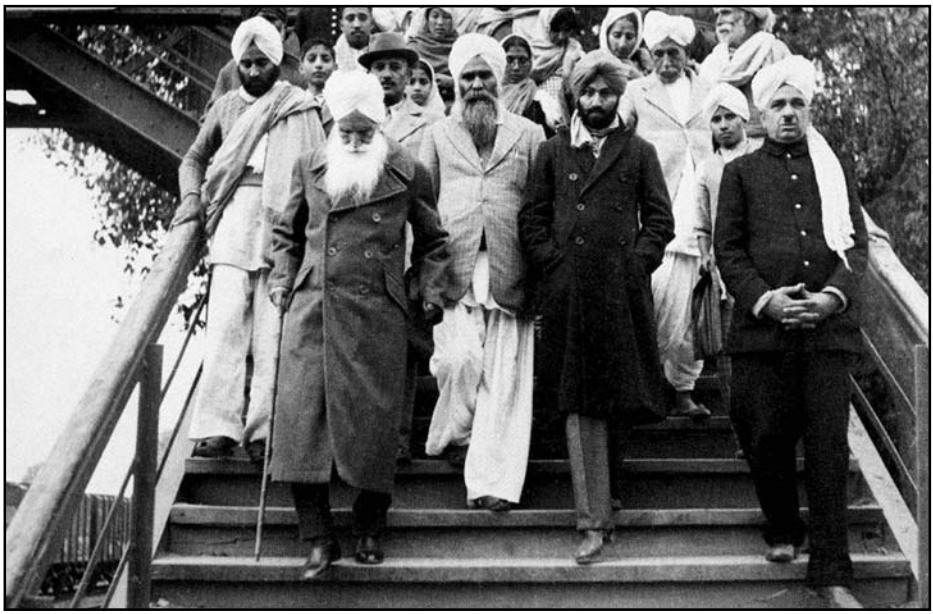

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अहंकार करना इस तरह है जिस तरह कोई पुलाव बनाकर उस पर राख छिड़क दे। हमारी भी यही हालत है अगर हम कोई अच्छा काम करके सन्तों की सेवा, दान-पुण्य करके अहंकार करते हैं कि यह हमने किया है या गुरु हमारे सहारे है अगर हम यह काम नहीं करेंगे तो यह इस तरह हैं कि हम पुलाव बनाकर उसके ऊपर राख डाल रहे

हैं।'' जब वक्त होता है तब हम गुरुमत को नहीं अपनाते गुरु जो कहता है वह नहीं करते। बाद में हम मन के पीछे लगकर गुमराह हो जाते हैं और दूसरे लोगों को भी गुमराह करते हैं।

याद रखो! महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''रूहानियत का काम वंशावली गुरुओं का नहीं होता। रूहानियत का काम कोई रूहानियत का माहिर ही कर सकता है।'' हिन्दुस्तान में आज भी कई परिवारों में वंशावली गुरु आते हैं। आज से चालीस-पचास साल पहले तो वंशावली गुरु घर-घर घूमते फिरते थे।

महाराज सावन सिंह जी पहले अपने वंशावली गुरु को एक रूपया दिया करते थे। जब आप बाबा जयमल सिंह जी की सोहबत में गए तो आपने अपने वंशावली गुरु को दस रूपये देकर कहा, ''मुझे पूरा गुरु मिल गया है अब आपको मेरे घर आने की जरूरत नहीं। मेरे लिए वेद ग्रंथ मेरे गुरु बाबा जयमल सिंह जी ही हैं।''

मुझे महाराज सावन सिंह जी की सोहबत-संगत में जाने का काफी मौका मिला है। यह आपकी दया ही थी कि मैं बचपन से ही आपके पास जाता रहा। आप जिस शामयाने के नीचे बैठते थे उसके ऊपर यही लिखा होता था बाबा जी! दया करो, मेहर करो। आप अपने गुरुदेव पर इतने आशिक थे कि शायद ही कोई मिसाल मिले? जो लोग आपकी संगत में रहे हैं उन्हें पता है कि महाराज सावन सिंह जी ने नाम लेकर कितनी कमाई की कितना अभ्यास किया। आपने बहुत कठिन साधना की। आप सिर्फ शारीरिक क्रिया के लिए ही बाहर निकलते थे।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास के गुरु बाबा अमोलक दास थे। बाबा अमोलक दास

श्रीचंद के सम्प्रदाय से थे। गुरु नानकदेव जी के दो लड़के श्रीचंद और लखमीदास थे। श्रीचंद ने गुरु नानकदेव जी से नाम नहीं लिया था। श्रीचंद ने अविनाशी मुनि से 'दो-शब्द' का भेद लिया था। श्रीचंद ने इस संसार में 151 साल यात्रा की। लखमीदास ने भी गुरु नानकदेव जी को गुरु नहीं माना था वह माँस आदि खाता था।

जब गुरु नानकदेव जी को भाई लैहणा मिला, गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा से पूछा, ''भाई! तेरा क्या नाम है?'' उसने कहा कि मेरा नाम लैहणा है। तब गुरु नानकदेव जी ने कहा कि हमने देना है तूने लेना है। जब आपने भाई लैहणा को अपनी जगह रूहानियत का काम करने के लिए कहा तब श्रीचंद और लखमीदास ने बहुत कष्ट मनाया। अमोलक दास को श्रीचंद से नाम था। बाबा अमोलक दास भी बड़ी लंबी आयु 140 साल इस संसार में रहे।

बाबा अमोलक दास ने नाभा स्टेट के बड़ोख्यो में अपना सादा जीवन बिताया। एक जमींदार हीरा सिंह बड़ोख्यों और नाभा के बीच ऊँटों पर सामान ढ़ोता था। वह हमेशा ही बाबा अमोलक दास के दर्शन किया करता था, वापसी में उनके लिए कुछ फल वगैरहा भी लाया करता था। हीरा सिंह को बाबा अमोलक दास के साथ बहुत लगाव था।

एक दिन बाबा अमोलकदास अपनी मौज में बैठे थे उन्होंने हीरा सिंह से कहा बोल क्या माँगता है, तुझे क्या चाहिए? हीरा सिंह ने कहा कि आपका दिया हुआ सब कुछ है। आखिर आपने कहा हीरा सिंह तुझे नाभा का राजा बना दें? आम श्रद्धा किसी की ही होती है जब सन्त किसी को दात देते हैं हर एक की श्रद्धा हो तो सारी दुनिया ही तर जाए। पास बैठे लोगों ने कहा कि जब हीरा सिंह नाभा से वापिस आता है तो बाबा जी को केले इत्यादि का

मत्था टेक जाता है। बाबा जी हीरा सिंह को खुश कर रहे हैं। वहाँ बैठे लोगों ने मजाक के तौर पर कहा कि जो इसके साथ बैठा है इसे वजीर बना दें। बाबा अमोलकदास ने कहा कि हमने इसे राजा बनाना था अब यह इसकी मौज है जिसको मर्जी वजीर बनाए।

मालिक की मौज हुई नाभा का राजा शरीर छोड़ गया। एक तरफ पटियाला और जीन्द के बड़े शक्तिशाली राजा थे, उनकी इच्छा थी कि हम नाभा स्टेट पर अपना कब्जा जमा लें। उस समय अंग्रेजो का राज्य था वे लोग बड़े इंसाफ पसंद थे कि हम वारिस को ही गद्दी देंगे। आमतौर पर हिन्दुस्तान में लोग मुर्दे की हड्डियां हरिद्वार में प्रवाह करते हैं। हरिद्वार के पंडित मरने वाले का नाम और तारीख वहाँ दर्ज करते हैं अगर किसी ने कुर्सीनामा निकलवाना हो तो हरिद्वार का कुर्सीनामा ठीक माना जाता है।

अंग्रेजो ने हरिद्वार से कुर्सीनामा निकलवाया तो हीरा सिंह वारिस निकला। हीरा सिंह को नाभा की गद्दी दी गई। हीरा सिंह बिल्कुल अनपढ़ था। हीरा सिंह ने अपने उस जमींदार साथी को अपना प्रधानमंत्री बनाया। हीरा सिंह बहुत न्यायकारी अच्छा राजा था। उसे यह गद्दी साधुओं की दया से मिली थी उसने हमेशा साधुओं की सेवा की। अंग्रेजो ने उसे राजऋषि महाराज हीरा सिंह का खिताब दिया। उसने हमेशा धार्मिक तरीके से राज्य चलाया।

सन्त हमें गुरुमत पर चलाते हैं लेकिन हम गुरुमत पर नहीं चलते। भजन-अभ्यास करना जीते जी मरना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि यह मेहनत की चीज है लेकिन हमारा ख्याल दुनिया में फैला हुआ है। हमने सिमरन के जरिए अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। तीसरे तिल का हमारे रूहानी सफर के साथ खास ताल्लुक है, हमारा सफर तीसरे तिल से शुरू होता है।

मैं बताया करता हूँ कि गुरुमत पर चलने के लिए आप किसी कमाई वाले महात्मा के पास जाएं। किसी सन्त से नाम लेने से पहले हमारा फर्ज बनता है हम देखें! क्या इसने दस-बीस साल परमार्थ में लगाए हैं। गुरुमत में जब हम तीसरे तिल पर पहुँच जाते हैं तो अंदर रूहानी सफर करना शुरू कर देते हैं। इस जगह से हमारे रूहानी सफर की अलिफ-बे शुरू होती है लेकिन गुरुमत सच्चखंड में जाकर मुकम्मल होती है।

जब घर का मालिक सोया होता है तो ये लुटेरे-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार घर को लूट लेते हैं। जब घर का मालिक जाग जाता है तो लुटेरे अपने आप भाग जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ये पाँचो लुटेरे बताकर जाते हैं। काम की जगह शील और संयम आ जाता है। क्रोध की जगह क्षमा आ जाती है। लोभ की जगह संतोष आ जाता है। ये सारी विरोधी शक्तियां निकल जाती हैं और दयाली शक्तियां डेरा लगा लेती है।''

याद रखो! कबीर साहब कहते हैं, ''दुनिया की रंगरलियां मनाते हुए कभी किसी को परमात्मा नहीं मिलता।'' हम परमात्मा को धोखा नहीं दे सकते। गुरु की ताकत हमारे अंदर काम करती है, हम गुरु को भी धोखा नहीं दे सकते। जब तक हम अपने शब्द रूप गुरु की तरह पवित्र नहीं होते वह हमारे लिए दरवाजा नहीं खोलता। अगर हम कभी भूले-भटके भजन पर बैठ जाएं तो मन हमारे साथ चालाकी करता है कि तुझे भजन में बैठे हुए दो दिन हो गए हैं तेरी कोई तरक्की नहीं हुई, यह मन का धोखा है।

मैं बताया करता हूँ कि शब्द रूप गुरु हमारे अंदर बैठा है, वह बेईंसाफ नहीं वह हमारी रूहानियत को बेकार नहीं जाने देता। वह हमारी रूहानियत को संभालकर रखता है। हमें अपना पैर मनमत

की सीढ़ी से हटाकर गुरुमत की सीढ़ी पर रख लेना चाहिए। गुरुमत पर चलते हुए जब हमें 'शब्द-नाम' का भेद मिल जाता है तो हम एक किस्म के सीढ़ी के आखिरी स्टेप पर पहुँच जाते हैं। जब नाम मिल गया पूरा गुरु मिल गया तो भरोसे के साथ अगला स्टेप उठाना है ताकि हम अपने घर चले जाएं। जो गुरु को हमेशा ही हाजिर नाजिर समझते हैं उनका सब कुछ ही बन जाता है।

हम कह देते हैं कि हम गुरुमत पर चलते हैं अगर हम अपने गिरेबान में झाँककर देखे तो हमें अंदर से ही जवाब मिल जाता है। अगर पाँच साल का बच्चा बैठा हो तो हम मामूली फल तोड़ने की भी कोशिश नहीं करते कि इंसान का बच्चा देख रहा है लेकिन हमारा गुरु 'शब्द-रूप' होकर हमारे अंदर बैठा है फिर भी हम कितने बुरे कर्म करते हैं कि हमें कौन देख रहा है? हमारे दिल में गुरु परमात्मा का पाँच साल के बच्चे जितना भी डर नहीं। जिनके मन में गुरु का प्यार है उनके अंदर गुरु का डर भी होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक जिन्हां मन भाव तिन्हां मन भाव है।

मैंने आपको जो बताया है आपने उस पर अमल करना है। 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है। कभी भी मेहनत का चोर नहीं बनना। मेहनती आदमी सदा कामयाब होता है। जहाँ भी जाना है गुरु का भरोसा लेकर जाना है गुरु ही हमारा रक्षक है।

गुरु के दिल के अंदर हजारों माता-पिता जैसी हमदर्दी और प्यार होता है। सच्चाई तो यह है जब शाम को शिष्य खाना खा ले तो गुरु को खुशी होती है। जिस तरह बत्तीस दाँत जीभ की रक्षा करते हैं उसी तरह गुरु भी हमारी रक्षा करता है। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: जब कोई व्यक्ति हमारी बनाई हुई चीज़ ले जाता है और यह दावा करता है कि यह चीज़ उसने बनाई है और वह उस चीज़ को बेचता है तो हमें अपने हक़ के लिए लड़ना चाहिए या उसे छोड़ देना चाहिए? क्योंकि हमें किसी पर मुकदमा न करने के लिए समझाया गया है। दूसरा हमें कहा गया है कि हम आपको पत्र न लिखे और न ही प्रसाद के लिए तंग करें। इस बारे में राय दें?

बाबाजी: पहले सवाल के बारे में महाराज कृपाल ने हमें कोर्ट में न जाने की सलाह दी है। आप महाराज कृपाल की बात पर अमल करें तो अच्छा है।

सबको तीन-चार महीने में एक बार पत्र लिखने की इजाजत दी गई है और सबको यह सलाह दी जाती है कि पत्र को छोटा करके लिखें। ग्रुप में प्रेमियों के पत्र आते हैं उन पत्रों का जवाब दिया जाता है। डाक में काफी समय लग जाता है कई बार पत्र इधर-उधर भी हो जाते हैं।

हर प्रेमी को ग्रुप में प्रसाद दिया जाता है। प्यारेयो! सन्त कभी भी सेवकों को प्रसाद के लिए मना नहीं करते। प्रसाद की बड़ी महानता है। जिन्हें प्रसाद का ज्ञान है वे बहुत फायदा उठा लेते हैं अगर हम प्रसाद को श्रद्धा से खाएंगे तो हमारा बहुत फायदा होगा। स्वामी जी महाराज ने कहा है:

गुरु प्रसादि खा तेरे भले की कहूँ।

कई बार देखा गया है कई बच्चों को 'नाम' भी नहीं मिला होता लेकिन उन्होंने गुरु के दर्शन किए होते हैं। मैंने अपनी जिंदगी

में ऐसे दो वाक्य देखे हैं जब उनका अन्त समय आया तो हजूर का दिया हुआ प्रसाद उनके मुँह में डाला तो उन्होंने कहा कि महाराज जी आ गए हैं। सतसंगियों के बच्चे बचपन से ही सन्तों की तस्वीर को देखकर माथा टेकते रहते हैं, उनमें बहुत श्रद्धा होती है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''प्रसाद का मतलब कृपा है। प्रसाद में गुरु की दया होती है लेकिन यह हमारी श्रद्धा पर निर्भर है कि हमें प्रसाद पर कितना विश्वास है कि कहीं हम प्रसाद को पैरों में तो नहीं फेंक रहे।''

बेशक हमारे सिक्ख समाज में गुरु नानकदेव जी को गए हुए पाँच सौ साल हो गए हैं। आज भी गुरुद्वारे में उनके नाम पर जो प्रसाद बाँटते हैं अगर बाँटने वाले से एक तिनका भी नीचे गिर जाए तो लोग उसे बड़ी इज्जत के साथ उठाकर खा लेते हैं।

बहुत से सतसंगियों ने मुझे परमपिता कृपाल के हाथ का प्रसाद दिया। मैंने उन प्रेमियों और अपने गुरुदेव का भी धन्यवाद किया लेकिन दिल में अफसोस भी किया कि अगर इस आदमी को प्रसाद की कद्र होती तो यह इस तरह से प्रसाद नहीं बाँटता।

पहले दूर पर बगोटा के आश्रम में प्रेमियों ने प्रसाद के मुत्तलिक सवाल किया था। मैंने अपने गुरुदेव के प्रसाद की महिमा बताई कि जब मेरे गुरुदेव महाराज कृपाल पहली बार मेरे घर आए तब उन्होंने काफी संतरे और सेब प्रसाद में दिए। बहुत से लोगों ने मुझसे विनती की कि उस प्रसाद में से हमें भी दें, कईयों का तो उस प्रसाद को चुराने का भी विचार था। मैंने अपने चौबारे का दरवाजा बंद कर लिया। मैंने जब तक उस प्रसाद को धीरे-धीरे खा नहीं लिया तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं आया।

सतसंगियों को प्रसाद की महानता का ज्ञान होना चाहिए कि प्रसाद कितना मीठा कितना प्यारा, कितना उत्तम है अगर हमारे अंदर श्रद्धा-प्यार हो तो प्रसाद हमारी जिंदगी को पलट देता है।

एक प्रेमी: *आप हमें ध्यान के बारे में कुछ बताएं कि भजन-सिमरन के साथ ध्यान का क्या ताल्लुक है?*

बाबाजी: जब तक हमारे विचार सही नहीं तब तक हमारे अंदर पवित्र ख्याल नहीं उठ सकते क्योंकि बुरे ख्याल बुरे विचारों से ही आते हैं। जब हम विचार करेंगे कि हमारे अंदर दिन-रात बुरे ख्याल क्यों पैदा हो रहे हैं उस समय हमें अपने ख्याल को दोनों आँखों के बीच रखकर मन की जुबान से सिमरन करना चाहिए। तब हमारे मन और आत्मा को नीचे खींचने वाली धाराएं ढीली हो जाएंगी, आत्मा तीसरे तिल पर एकाग्र होनी शुरु हो जाएगी।

सतसंगी अच्छे और प्यारे हैं। ये बेचारे अपनी तरफ से भजन-सिमरन करते हैं लेकिन अपने विचारों पर जोर नहीं देते। अपने ख्यालों को साफ नहीं रखते और न ही अपने खान-पान पर विचार करते हैं इसलिए ये जल्दी कामयाब नहीं हाते। हम जब तक अपने जीवन को सच्चा-सुच्चा नहीं बनाते तब तक हम अंदर जाने के काबिल नहीं होते; परमात्मा अंदर से दरवाजा ही नहीं खोलता।

अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए चाहे हम बाग लगाए, गेहूँ बीजे या गन्ना बीजे इसके लिए हमें जमीन की बहुत तैयारी करनी पड़ती है। जमीन की तैयारी अच्छी होगी और इसमें समय पर अच्छा खाद-पानी वगैरहा दिया जाएगा तभी फसल घर में आएगी।

इसी तरह सतसंगी को 'नाम' का बीज उगाने के लिए और उसका फल खाने के लिए अपने हृदय की जमीन को साफ और

पवित्र करना पड़ेगा तभी नाम का फल उस पेड़ को हरा-भरा कर सकता है और हम फल खा सकते हैं।

एक प्रेमी: *मेरे ख्याल में अगर हम भजन-सिमरन करें तभी हमारे ख्याल पवित्र हो सकते हैं लेकिन आपके कहे अनुसार अगर हमारे ख्याल पवित्र हों तभी हम भजन-सिमरन कर सकते है?*

बाबाजी: देखो भई! अगर हमने कपड़ो को साफ करना है तो हमें मशीन लानी पड़ेगी उसमें सर्फ डालना पड़ेगा तभी हम कपड़ो में से मैल निकाल सकते हैं। इसी तरह आत्मा को साफ करने के लिए जरूरी है कि हम अपने ख्यालों को ठीक करें। प्रेम से भजन-सिमरन करना है तो ख्यालों को ठीक करना भी हमारा फर्ज है।

अगर हम यह सोचें कि पहले फल खाएं फिर पौधा लगाएंगे ऐसा नहीं हो सकता। पौधा लगाने के लिए हमें जमीन की तैयारी करनी पड़ेगी। पौधे की परवरिश करने से ही उसका फल मीठा लगता है। इसी तरह हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह पैदा होती है तो अपने आपको साफ करना भी हमारा फर्ज बनता है फिर हमारी जुबान पर कोई शिकायत नहीं आएगी कि हमारा भजन नहीं बनता, हमारा मन नहीं टिकता या हमें भजन के समय नींद आती है; ये सब समस्याएं खत्म हो जाती हैं।

महाराज कृपाल का डायरी रखवाने का मकसद यही था कि हम अपने आपको सुधारें और भजन-सिमरन करें। अपने आपको साफ सुथरा रखना और अपने विचारों को पवित्र रखना कोई खास मुश्किल नहीं अगर हम अभ्यास करते रहेंगे तो यह बहुत साधारण हो जाता है; अपने आप ही अंदर से नेक विचार आने शुरु हो जाते हैं।

कभी-कभी तो सतसंग में बैठे हुए भी सतसंगी के अंदर ऐसे ख्याल आ जाते हैं जो उसे परेशान करते हैं। आम दुनिया को तो इस बारे में मालूम ही नहीं कि ऐसे ख्याल हमें खराब करते हैं लेकिन सतसंगी तो जानता है फिर भी वह उसके लिए कोई इंतजाम नहीं करता। इसी तरह अगर हम नेक विचारों की आदत डाल लेंगे तो बिना किसी कोशिश के हमारे अंदर नेक विचार उठने शुरु हो जाएंगे। कमजोर मन ही परेशानियाँ पैदा करता है। आप मन को कमजोरी जाहिर न होने दें और मन को सिमरन का रस देते रहें। मन जो माँगता है इसे वह न दें; आप आदत डाल लें तो नेक विचार आने शुरु हो जाएंगे।

***

धन्य अजायब

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से दिल्ली में 17, 18 व 19 मई 2013 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार,

(नज़दीक पीरा गढ़ी चौक) नई दिल्ली - 110 087

फोन - 98 18 20 19 99 व 98 10 21 21 38

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 5, 6 व 7 जुलाई 2013 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन

फुटबाल ग्राउंड के सामने

(कांकरिया झील के पास)

अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

शैलेष शाह - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94